अधिसूचना संख्या : F. No. COE/Ph. D/(Notification)/548/2023 अधिसूचना तिथि :16.11.2023

शोधार्थी :मो. दानिश

शोध निर्देशक : प्रो. इंदु वीरेंद्रा

विभाग : हिंदी, मानविकी एवं भाषा संकाय, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली-110025

विषय: रेणु के कथा साहित्य में चित्रित सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यहीनता का अध्ययन

बीज शब्द

1. कथासाहित्य

2. मूल्य

3.मूल्यहीनता

4.समाज

5.संस्कृति

शोधार्थी की स्थापनाएं -

1.हिंदी कथा साहित्य में फणीश्वरनाथ रेणु का आगमन सन 1945 में 'बट बाबा' कहानी के साथ हुआ। रेणु का कथा साहित्य अपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भों के कारण अत्यंत उल्लेखनीय एवं पठनीय है। रेणु के अधिकांश कथा-साहित्य में, चाहे उसके केंद्र में गांव हो या शहर, शोषित -पीड़ित सामान्य जन की त्रासद स्थितियों और अनुभवों की अभिव्यक्ति है। इन रचनाओं में शोषक वर्गों के जीवन के पाखंड, खोखलेपन और अमनवीयता का चित्रण है। इस दृष्टि से रेणु लोकजीवन की ट्रेजेडी और अभिजात वर्ग के आडंबर को अनावृत करने वाले कथाकार हैँ।

2.मूल्य मानव जीवन को अनुशासन-बद्ध करने के सामाजिक सूत्र हैँ। इनसे वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक तौर पर सम्पूर्ण मानव व्यवहार के मानदंड स्थापित होते हैँ। युगीन परिवेश से मूल्यों की अनुपालना में परिवर्तन घटित होता है। चुंकि हर समाज के नैतिक मापदंड एक जैसे नहीं होते इसलिए हर समाज का मूल्य भी एक जैसा नहीं होता।

3.वर्तमान समय में विविध प्रकार के सामाजिक, भौतिक दबावों के फलस्वरूप मूल्यों में ह्रास परिलक्षित हो रहा है, जिसे अवमूल्यन की संज्ञा दी जाती है। अवमूल्यन के इन कारकों को रेणु के कथा साहित्य में अंतर्विष्ट परिस्थितियों से संबद्ध करने पर यह ज्ञात होता है कि इसके पीछे का मूल कारण स्वार्थ और स्वान्तः सुखाय की भावना के अतिरिक्त व्यवस्था से मोहभंग है। शासक वर्ग की अराजकता और निष्क्रियता ने इस प्रक्रिया को और गति दी है।

4.साहित्य में जीवन और समाज की युगीन और भावी दोनों परिस्थितियों का समावेश होता है। रेणु के कथा साहित्य में

-आजादी और आजादी के बाद -. दोनों कालखंडों का विस्तृत चित्रण मिलता है। इनके अध्ययन से यह मालूम होता है कि आज के युग में मानव मूल्य और साहित्य दोनों गहरे दबावों से गुजर रहे हैँ। दोनों में अवमूल्यन होता जा रहा है। आधुनिक समय की वैज्ञानिक प्रगति ने मानव की संवेदना को क्षीण किया है इसलिए चंहुओर अवमूल्यन की दशा विद्यमान है।

5. रेणु के कथा साहित्य में अंतर्निहित अवमूल्यन की स्थितियों से यह स्थापित होता है कि समाज में जब मूल्यों का पतन तीव्रता से होने लगता है तो इसका प्रमुख भुक्तभोगी हाशिये का समाज बनता है जिससे सामाजिक विसंगति अथवा विषमता

Edit with WPS Office

की खाई चौड़ी होती जाती है और इस कारण समावेशी समाज का निर्माण असम्भव हो जाता है।

निष्कर्ष -:

कालजयी कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु ने कथा साहित्य की विधा को अपनी लेखनी से नये आयामों तक पहुँचाकर न केवल उसे सशक्त किया बल्कि समाज-संस्कृति के जीवंत अध्ययन का प्रामाणिक स्रोत भी बनाया। साहित्य में सामाजिक परिदृश्य को उभारने के क्रम में उन्होंने राजनीतिक घटनाक्रमों और कारकों की भी सूक्ष्म विवेचना की है। रेणु लगातार राजनीति से जुड़े रहे। उनके कथासाहित्य में युगीन राजनीतिक घटनाचक्रों की यथार्थ छवियाँ मौजूद हैं। रेणु ने 'मैला आँचल', 'परती परिकथा', 'कितने चौराहे', 'दीर्घतपा', 'जुलूस' 'तवे एकला चलो रे', 'जलवा', 'पुरानी कहानी: नया पाठ' तथा 'आत्मसाक्षी' जैसी उत्कृष्ट गद्य रचनाओं में अवसरवादी राजनीति और नेताओं के चरित्रों की बखिया उधेड़ी है।

आधुनिक साहित्य में 'मूल्य' शब्द का प्रयोग वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक स्तर पर संपूर्ण मानव व्यवहार के मानदंड के रूप में किया जाता है। मूल्य युगीन परिवेश से प्रभावित होकर परिवर्तनशील होते हैं इसीलिए इन के संदर्भ में अनेक मतान्तर उपलब्ध होते हैं। हर युग अपनी सामयिक आवश्यकताओं के अनुसार ही मूल्य से परिचित होता है तथा उसे अर्जित कर अभिव्यक्त करता है। कर अभिव्यक्त करता है।पुराने मूल्य अपने अर्थ खोने लगे हैं। रमूल्य प्रक्रिया इस स्थिति के आधार पर अपनी दिशा निर्धारित करती है। बदलते परिवेश में नवीन सृजन करने की इच्छा मुल्यांकन को जन्म देती है। सृजन की आकांक्षा ही मूल्य परिवर्तन के लिए उत्तरदायी है। नये मूल्यों की स्थापना मानवीय अनुभुति पर आधारित परिवर्तन की दीर्घकालीन प्रक्रिया को पार करने में ही संभव होती है। कोई भी समाज अपनी युगीन परिस्थितियों के अनुसार ही मूल्यों का निर्माण और निर्वहन करता है। चूंकि हर समाज के नैतिक मापदंड एक जैसे नहीं होते इसलिए हर समाज का मूल्य भी एक जैसा नहीं होता ।

वर्तमान समय में मूल्यों का पतन हो रहा है, पुराने मूल्य अब उपेक्षित होते जा रहे हैं। दया, करुणा, प्रेम, सदाचारिता और परोपकार जैसे मूल्य व्यावहारिक जीवन से सुप्त होने लगे हैं। अब झूठ, धोखा, भ्रष्टाचार जैसे अनैतिक कृत्यों को ही मूल्य का समानार्थी माना जाने लगा है। मूल्यों के क्षरण के इस दौर को मूल्यहीनता की संज्ञा दी जा सकती है। पुराने मूल्य अपने अर्थ खोने लगे हैं। साहित्य के प्रसंग में 'हितेन सह सहितम साहित्यम ' और 'सहितस्य भावः इति साहित्यम ' की चर्चा की जाती है। इस दृष्टि से साहित्यकार का यह दायित्व है वह अपने साहित्य के माध्यम से मूल्यों की गरिमा को स्थापित करे और मूल्यों के अर्थसंगत पतन पर ध्यान दिलाकर पाठकों को इसके महत्व से सचेत भी करे। फणीश्वरनाथ रेणु ने इस दायित्व का निर्वहन पूरी तन्मयता से किया है। उनके साहित्य में काल और परिवेश के संबद्ध चरणों में परिघटित सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक दृष्टांतों, जिनसे मूल्यहीनता को बल मिला है, का निष्पक्ष चित्रण मिलता है।

मूल्यहीनता के इस विमर्श में यह जोड़ना जरुरी है कि संस्कृति भी मानव जीवन में समाहित एक समुच्चय है। समाज में घटित होनेवाले सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक घटनाओं के समुञ्चय को संस्कृति की परिभाषा में शामिल किया जा सकता है। 'संस्कृति' शब्द का अर्थ संस्कार से है, जिसका अर्थ है-संशोधन करना, परिष्कार करना। संशोधन अथवा परिष्कार करने की आवश्यकता इसलिए हुई क्योंकि मनुष्य एक सभ्य सामाजिक प्राणी है और इस नाते वह अपने सामाजिक जीवन व्यवहारों को दिनानुदिन उत्तम बनाने की कोशिश करता है। उत्तम बनाने और परिष्कार करने की भावना में ही वावमुल्यों को आदर्श रूप में अपनाने का भाव विद्यमान है। संस्कृति का वाहा पक्ष भी होता है और आंतरिक भी। उसका बाह्य पक्ष आंतरिक का प्रतिविम्व नहीं तथापि उसमे संबंधित अवश्य रहता है। संस्कृति के बाह्य पक्ष को ही सभ्यता कहते है। वाकृति के प्रमुख तत्वों में सामाजिक लोकाचार, पारस्परिक जीवन-व्यवहार, निष्टता. मर्यादा, सद्भावना और समावेशी विचारधारा सम्मिलित है। साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि साहित्य में संस्कृति की छवियों का अंकन भी प्रमुखता से किया जाना अनिवार्य है। समय, देशकाल और परिस्थिति के परिप्रेक्ष्य में संस्कृतियों में परिवर्तन भी होता है। रेणु के कथा साहित्य में इन प्रभावों और काल के प्रवाह के कारण संस्कृति में हुए परिवर्तनों को बहुत ही कुजलता से प्रस्तुत किया गया है। इन्हीं परिवर्तनों में सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यहीनता के बीज बिन्दुओं का समावेश है। इन बीज-विन्दुओं में निहित मुल्वहीनता की यचातव्य, विशद् व्याख्या रेणु के कथा साहित्य में विद्यमान है। वास्तव में रेणु का कथासाहित्य युगीन अवमूल्यन का प्रामाणिक दस्तावेज है।

Edit with WPS Office